हिटलर एक अत्यंत ही महत्वाकांक्षी, घोर प्रतिक्रियावादी एवं भीषण साम्राज्यवादी व्यक्ति था जिसने अपने राष्ट्र जर्मनी को धरती के सतह से उठाकर आकाश पर टिकाने की चेष्टा की। वह कट्टर जर्मन राष्ट्रवादी भावना के आधार पर वृहत्तर जर्मनी के राज्य की स्थापना करना चाहता था।

हिटलर की विदेश नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य थे - (i) वर्साय संधि को भंग करना (ii) तृतीय राईख के अंतर्गत सारी जर्मन जाति को एक सूत्र में संगठित करना और (iii) जर्मन साम्राज्य का विस्तार करना। इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु वह किसी भी हद तक जाने को तैयार था।

1933 में हिटलर जर्मनी का चांसलर बना। वह अपना उग्र एवं सक्रिय विदेश नीति का आरम्भ करने से पहले देश की आंतरिक विरोध की पूर्णतः समाप्त करके अपने सर्वसत्तावादी राज्य को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करना चाहता था और धीरे-धीरे वर्साय की संधि एवं राष्ट्रसंघ के बंधनों से मुक्त होकर पुनः शस्त्रीकरण की गति को बढ़ाकर जर्मनी की सैनिक शक्ति को बढ़ाना चाहता था। साथ ही वह ब्रिटेन एवं फ्रांस के विरोध की आँच को भी थोड़े समय के लिए दूर रखना चाहता था। इस तरह अपने शासन के प्रारम्भिक वर्षों में उसने एक लोचपूर्ण नीति चातुर्य को अपने विदेश नीति में शामिल किया।

राष्ट्रसंघ की सदस्यता उसके विचार में जर्मनी के माथे पर कलंक का टीका था। 14 Oct 1933 को हिटलर ने राष्ट्रसंघ से अपना संबंध विच्छेद कर लिया। विदेश नीति के क्षेत्र में हिटलर की यह प्रथम कूटनीतिक चाल थी। फलतः यूरोप के ~~सिर~~ देश किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए।

मित्र राष्ट्रों ने वर्साय संधि द्वारा जर्मनी के सार प्रांत पर अधिकार कर लिया था। जनवरी 1935 में वहाँ जनमत संग्रह कराया गया। वहाँ के लोगों ने जर्मनी के साथ रहने का फैसला किया और इस प्रकार सार का क्षेत्र जर्मनी को वापस प्राप्त हो गया। यह हिटलर की एक राजनीतिक सफलता थी।

वर्साय संधि के द्वारा जर्मनी को युद्ध के लिए दोषी ठहराया गया था और उस पर क्षतिपूर्ति की बहुत बड़ी रकम लादी गयी थी। हिटलर ने क्षतिपूर्ति और युद्ध अपराध को स्वीकार नहीं किया। वर्साय संधि के द्वारा जर्मनी की सैन्य शक्ति को सीमित कर दिया गया था। ~~इस~~ हिटलर ने इसको भी मानने

इंकार कर दिया। उसने यह कहकर इस बंधन का उल्लंघन किया कि मित्रराष्ट्रों ने निःशस्त्रीकरण की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। इसलिए जर्मनी इस बंधन से मुक्त है। इसने जर्मनी में सैनिक सेवा को अनिवार्य कर दिया। बाद में उसने यह घोषणा की कि जर्मनी वर्साय संधि की शर्तों से अपने को मुक्त समझता है और संधि के अन्तर्गत कोई भी प्रतिबन्ध जर्मनी पर लागू नहीं होगा। इस तरह हिटलर की विदेश नीति का एक उद्देश्य पूरा हुआ।

हिटलर ने अपनी कूटनीतिक चालों की नीति के द्वारा फ्रांस को दुःखी कर दिया था। वह जानता था कि इंग्लैंड इस योजना को मित्र राष्ट्र कभी पसंद नहीं करेंगे। इसलिए उसने कूटनीति द्वारा अपना हित साधने का प्रयास किया। वह मित्र राष्ट्रों में फूट डालकर अपना काम निकालना चाहता था। उस समय रूस और फ्रांस के बीच संधि हुई। हिटलर जानता था कि इंग्लैंड कभी भी फ्रांस को शक्तिशाली होना पसंद नहीं करेगा। अतः हिटलर इस बात पर इंग्लैंड के साथ समझौता करने के लिए तैयार हो गया कि जर्मनी अपनी सामुद्रिक शक्ति का विस्तार नहीं करेगा। फलतः दोनों देशों के बीच 1935 में एक समझौता हुआ। इसके अनुसार इंग्लैंड ने यह स्वीकार किया कि जर्मनी अपनी स्थल और वायु सेना में वृद्धि कर सकता है। इस तरह इंग्लैंड ने एक प्रकार से जर्मनी द्वारा वर्साय संधि की शर्तों के उल्लंघन का अनुमोदन कर दिया। यह हिटलर की महान सफलता थी।

वर्साय संधि के द्वारा राइन लैंड की किलेबंदी पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। हिटलर ने अन्य परिस्थितियों का फायदा उठाया। 1935 में इटली ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया। फ्रांस एवं इंग्लैंड ने इसका विरोध किया। राष्ट्र संघ ने इटली की आर्थिक नाकेबंदी की लेकिन वह इटली को नहीं रोक सका। इस घटना से प्रोत्साहित होकर हिटलर ने भी राइनलैंड पर अधिकार कर लिया। फ्रांस ने उसके खिलाफ सैनिक कार्रवाई का प्रस्ताव रखा लेकिन उसका कोई फल नहीं निकला।

1936 तक हिटलर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक सफलताएँ हासिल कर चुका था और जर्मनी की शक्ति को संगठित कर चुका था लेकिन जर्मनी के राजनीतिक की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हो पाया था। इसके लिए समान दृष्टिकोण एवं समान विचार-धारा वाले राष्ट्रों के सहयोग